ओ३म्

श्रीमद् भागवत हटाओ!

श्रीकृष्ण कलंक मिटाओ!!

—स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती

प्राच्य साहित्य परिषद्
आगरा

मूल्य चार रुपये

ओ३म्

भूमिका

यह पुस्तिका प्रस्तुत करने का उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है, अपितु सत्य सनातन ईश्वरीय वेद धर्म का प्रतिपादन करना है। पाखण्ड, अन्धश्रद्धा निर्मूलन कर अपने महापुरुषों के चरित्र का रक्षण करना सबका ही कर्तव्य है। भागवतादि पुराणों में श्री कृष्ण जी के चरित्र का हनन कर समाज को वैदिक मार्ग से दूर कर वाममार्ग का प्रचार किया गया है। अनैतिक, असांस्कृतिक, असामाजिक एवं भ्रष्ट, कलंकित, दुराचार पूर्ण, व्यभिचार प्रसारक भागवत महापुराण से हिन्दु (आर्य) जाति को सचेत करने का अल्प सा प्रयत्न इस पुस्तिका के माध्यम से किया गया है। भागवत के पठन-पाठन करने वाले धूर्त पंडित और पाखंडी भागवत कथाकार से तथा सुनने वाले श्रद्धालु भक्तजनों से अपेक्षा है कि वे सोचें, समझें और अपनी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा कर उसे पल्लवित करें।

इस पुस्तिका के लेखन का आधार स्व० डॉ० श्रीराम आर्य, कासगंज, एटा की पुस्तकें हैं। मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ। विशेष जानकारी के लिए श्री लाजपतराय अग्रवाल, प्रकाशक अमर स्वामी प्रकाशन, १०५८ विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०) २०१००१ से सम्पर्क करें।

— स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती

आर्य समाज सेक्टर ४ हिरणमगरी, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००२

श्रीमद् भागवत हटाओ।
श्रीकृष्ण कलंक मिटाओ॥

श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः॥

पुराणों में प्रतिपादित मनगढ़न्त काल्पनिक कथाओं जैसे चीर हरण, रास लीलाओं से श्रीकृष्ण चरित्र कलंकित हुआ है। बहुगुणी, बहु आयामी श्रीकृष्ण जी जैसे अपने आप्त पुरुषों पर किये गये लांछनास्पद कलंक हटाना अनिवार्य और आवश्यक है। मोहम्मद साहिब पैगम्बर के हिजारत करने से महाराष्ट्र की पाठ्य पुस्तक में पलायन शब्द का प्रयोग हुआ था, उसके लिए इतना तूफान और बवंडर इस्लामियों ने मचाया कि पुस्तकें जलायी गयी थीं। वे लोग अपने सन्मान्य व्यक्ति के लिए इतने जाग्रत हैं, कुछ बात तो उनसे सीखना ही चाहिये। सीता का छिनाला पुस्तक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम चन्द्र जी के चरित्र को कलंकित करने वाली लिखकर प्रकाशित की गयी थी, जिसके जवाब में पं. चमूपति एम. ए. आर्य समाजी द्वारा लिखी पुस्तक रंगीला रसूल जब्त तो की गयी परन्तु प्रकाशक पं. राजपाल जी का दिनदहाड़े उनकी पुस्तकों की दुकान पर लाहौर में इल्मेद्दीन नामक मुसलमान ने खून कर दिया था, वे लोग इस कदर अपने माननीयों के चरित्र हनन पर (वास्तविक सच्चाई भरा चरित्र होने पर भी) टूट पड़ते हैं। क्या हिन्दू जाति इससे कोई सबक लेगी ?

विद्वान् कृष्ण जी बलवान, चरित्रवान, योगेश्वर, राजनीतिज्ञ, धर्म-रक्षक, सज्जनों के रक्षक, पक्षपात रहित, सत्यवादी, न्यायप्रिय एवं कर्म कुशल थे। किन्तु श्री मद् भागवतादि पुराणों में उन पर अत्यन्त अश्लील, अभद्र और गर्हणीय आक्षेप किये गये हैं, जो किसी प्रकार सहे नहीं जा सकते। अपने महापुरुषों की गौरव गरिमा अखंडित, अबाधित रखना यह हम सबका आद्य कर्तव्य है। कृष्ण जी का अमर उपदेश गीता के माध्यम से समस्त संसार को आध्यात्मिक दृष्ट्या प्रभावित कर रहा है। ऐसे तीव्र प्रखर बुद्धिवादी, ऋतवादी, वेदज्ञ, योगी कृष्ण जी थे। उन्होंने किसी प्रकार का अशिष्ट, असांस्कृतिक, पापकर्म व्यवहार नहीं किया था। ऐसे आप्त पुरुष के जीवन पर अवांछित, अश्लाघ्य, असभ्य, असंस्कृत, अशोभनीय आक्षेप कर उन्हें व्यभिचारी, पर नारी

गमन करने वाला, लिखना कितना परम पाप है, जिसकी कोई सीमा नहीं। पवित्र, महान आत्मा पर कीचड़ उछालने से उनके यश कीर्ति में कोई कमी नहीं आती, परन्तु इतना जरूर है कि ऐसे दूषित ग्रन्थ लेखकों के मनोभावों का स्पष्टत: विश्लेषण और ज्ञान होता है तथा उनकी व्यभिचारिणी वृत्ति, काम वासना की अतृप्तता, भोगवादी राक्षसी आचार हीनता ही प्रकट होती है। साथ ही समाज को पदभ्रष्ट करने का महापाप उनसे होता है। महामना भीष्म पितामह जैसे उच्च कोटि के ज्येष्ठ और श्रेष्ठ, ऋषि और देवता तुल्य महामानव ने चक्रवर्ती सार्वभौम सम्राट युधिष्ठिर द्वारा आयोजित राजसूय यज्ञ के अवसर पर स्पष्ट घोषणा की थी कि संसार में अर्घ्य दिये जाने के अनुपम अधिकारी केवल एक मात्र योगेश्वर कृष्ण हैं।

मल्ल विद्या प्रवीण, गौदुग्ध मक्खनादि से प्राप्त शारीरिक शक्ति के बलबूते पर चाणूर और मुष्टिक शक्तिशाली, बलाढ्या मल्लों को सरेआम पछाड़ने वाले ब्रह्मचारी कृष्ण कहाँ और गोपियों से रंगरेलियाँ करने वाले भ्रष्ट कृष्ण कहाँ? दुष्ट अत्याचारी कंस को मार गिराकर उसका राज्य स्वयं न लेते हुए, निर्लोभी कृष्ण ने बंदिस्थ उग्रसेन को मुक्त कर उन्हें सौंप दिया ऐसा कृष्ण क्या मथुरा वृन्दावन की ब्रजभूमि पर दूध, दही, मक्खन का चौर्य कर्म कर सकता है? बिना रक्तपात के सामन्तवादी और विस्तारवादी जरासंध को मरवा कर मगध का राज्य उसके पुत्र सहदेव को प्रदान करने वाला कृष्ण कहाँ, और कुब्जा से संभोग करने वाला कृष्ण कहाँ? धर्म की रक्षा कर गीता का जग प्रसिद्ध उपदेश करने वाला कृष्ण कहाँ और गोपियों के चीर हरण कर उन्हें नग्न देखने वाला कदम्ब वृक्ष पर आरूढ़ कृष्ण कहाँ? तप, त्याग, ब्रह्मचर्य धारण कर जीवन में केवल एक पत्नीव्रतधारी कृष्ण कहाँ और एक सौ आठ रानियाँ और सोलह हजार पत्नियाँ करने वाला कामुक कृष्ण कहाँ? स्वनामधन्य इकलौते सुपुत्र प्रद्युम्न को जन्म देने वाला कृष्ण कहाँ और सोलह हजार एक सौ आठ युवतियों से नब्बे हजार पुत्र पैदा करने वाला कृष्ण कहाँ? साम-दाम-दण्ड-भेद की राजनीति जानने वाला और जरासन्ध के आक्रमण से सुरक्षा कर द्वारिका जैसे अभेद्य दुर्ग का राज्य स्थापन करने वाला कृष्ण कहाँ और मैया यशोदा के भाई रायाण की पत्नी, रिश्ते में मामी लगने वाली बृषभानु गोप की पुत्री, राधा के संग छिछोरा

कर्म करने वाला कृष्ण कहाँ? महाभारत युद्ध में सुदर्शन चक्रधारी तेजस्वी महारथी कृष्ण कहाँ और गो लोक निवासी राधा के संग रति प्रसंग कर शाप खाने वाला कृष्ण कहाँ? पाञ्चजन्य शंख ध्वनि से कर्णभेदी, गगनभेदी बुलंद ललकार करने वाला कृष्ण कहाँ और बांसुरी पावा की मोहक मधुर ध्वनि से गोपियों को मोहित करने वाला कृष्ण कहाँ? ऐसे कई उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

इस प्रकार पढ़कर और जानकर भी पौराणिक पंडित और कथाकार भागवत पुराण जैसे ग्रन्थों का बार-बार पठन-पाठन कर रहे हैं। ये पुराण ग्रन्थ कृष्ण जी के चरित्र को भ्रष्ट एवं कलंकित करते हैं। प्रश्न है कि क्या ऐसे पौराणिक ग्रन्थ महर्षि व्यास जैसे मनीषी ने लिखे हैं? भागवत १/१/२ के अनुसार यह वैष्णवों का महापुराण श्री मद् भागवत वेदव्यास जी द्वारा लिखित है, ऐसा बताया है किन्तु यह बात सत्य नहीं है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में इस भागवत का लेखक बोपदेव बताया है। यह पं. बोपदेव ११वीं शताब्दी में हुए थे। महाभारत आदिपर्व ६२/५३ के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में बताया है कि जो इस महाभारत में कहा है वही अन्यत्र है, जो इसमें नहीं है, वह कहीं नहीं है, इससे स्पष्ट है कि जो महाभारत से विरुद्ध है वह व्यास जी का नहीं है। इस में और एक बात जाननी चाहिए कि वेद व्यास जी के नाम पर समग्र १८ पुराण बताये हैं। गणेश पुराण में सृष्टि की रचना गणेश द्वारा लिखी है, शिव पुराण में शिवजी द्वारा, विष्णु पुराण में विष्णु द्वारा। इस प्रकार एक ही लेखक (और व्यास जी जैसा लेखक) ऐसा भेदजनक लेख अन्यान्य प्रकार नहीं लिख सकता। तब तो पुराणों के कर्ता व्यास जी नहीं हैं, यह ही स्पष्ट विदित होता है।

भागवतानुसार राजा परीक्षित को शुकदेव जी ने भागवत सुनाया, यह भी गलत है, कारण राजा परीक्षित जी का राज्यकाल युधिष्ठिर जी की मृत्यु पश्चात था और शुकदेव जी तो राजा युधिष्ठिर से पूर्व ही मृत्यु पा चुके थे।

महाभारत माहात्म्य प्रकरण अध्याय १ श्लोक ३६ में लिखा है–'आश्रमाः यवनैरुद्वस्तीर्थानि सरिस्तथा'। नारद जी कहते हैं , इस युग में यवनों ने भारत की

नदियों, तीर्थादि पर अधिकार कर देव मन्दिरों को नष्ट कर दिया है। इस श्लोक से स्पष्ट हुआ कि यह भागवत मुसलमानी आक्रमण के बाद लिखी गई है, कारण कि मुसलमान ही यवन जाति कहाती है।

श्रीधर भाष्यकार ने लिखा है कि यह भागवत व्यास कृत नहीं है और दूसरे की लिखी है ऐसी शंका करना उचित नहीं है, परन्तु प्राप्त होने पर ही निषेध किया जाता है। इस न्याय से भागवत दूसरे द्वारा ही लिखी है यह जानें।

ग्रन्थकार ने अपनी सुरक्षा के लिए वेद व्यास जी के नाम का आश्रय लेकर जनता को दिग्भ्रमित करना, यह ही लेखक का उद्देश्य सिद्ध होता है। इस देश में महाभारत के पश्चात् वाममार्ग प्रचलित हुआ, ऐसे वाममार्गियों की ही यह दुष्ट करतूत है। परन्तु दु:ख, खेद और कष्ट इस बात का है कि ऐसे भ्रष्ट पुराण और भागवतादि को तथाकथित पौराणिक हरि भक्ति परायण कथाकार भागवत ज्ञान यज्ञ के नाम से प्रसिद्ध कर हिन्दुओं के भाविक और भावुक स्त्री पुरुषों की पवित्र भावनाओं का और विचारों का शोषण कर उन्हें पाप नरक मार्ग का पथिक बना रहे हैं। ऐसे समस्त पण्डितों का धिक्कार है।

भागवत अविश्वसनीय ग्रन्थ

भागवत स्कन्ध २ अध्याय ७ में अवतारों की सूची दी है। इसमें सब अवतार २१ माने हैं। इस सूची में हयग्रीव नामक पशु अवतार को सम्मिलित किया है और नारद तथा मोहिनी अवतारों को निकाल दिया है। अवतारों की एक सूची स्कन्ध १ अध्याय ३ श्लोक ६ से २५ पर्यन्त है, जिसमें कलि अवतार सहित २२ अवतार माने हैं। इस सूची में रामचन्द्रजी का क्रमांक १८ वां है। अचरज यह है कि वेद व्यास को १७ वें क्रमांक पर दर्शाया है, कितना विपरीत कार्य है? भगवान रामचन्द्र त्रेतायुग के अन्त में हुए हैं जिन्हें ८ लक्ष ७०,००० वर्ष हुए हैं और वेदव्यास द्वापर के अन्त में हुए हैं जिन्हें केवल ५,२०० वर्ष हुए हैं। इससे यह बात उजागर हुई कि भागवत विश्वसनीय ग्रन्थ नहीं है। इसी प्रकार सर्वत्र मान्य २४ अवतार भागवत नहीं मानता, क्या यही भागवत की श्रेष्ठता है? हयग्रीव अवतार तो ऐसा विलक्षण प्राणी था, जिसका शिर घोड़े का और शेष शरीर मनुष्य का। वाह रे वाह, हिन्दुओं के पौराणिक अवतार! ऐसे

अवतारों ने तो विश्व प्रदर्शनी में प्रथमांक ही लेना है।

व्यास जी का अवतार वह है जिनका जन्म उनके पिता पराशर जी के द्वारा एक मल्लाह की पुत्री के साथ व्यभिचार करने से हुआ है और इन्हीं व्यास जी ने विचित्रवीर्य की रानियों से नियोग कर पाण्डु और धृतराष्ट्र को तथा दासी से विदुर जी को पैदा किया था। देखिये व्यास जी भगवान का अवतार होने पर भी संयम या ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सके। अवतारों में जैनियों के तीर्थंकर ऋषभदेव सम्मिलित हैं। इसी प्रकार गौतम बुद्ध भी अवतारों में माने गये हैं। भागवत में ५/५ में ऋषभदेव सम्बन्धी वर्णन आया है कि वे सोते-सोते ही खाते पीते थे। वैसे ही लेटे-लेटे मलमूत्र त्यागते थे। तब वे स्वयं अपने मलमूत्र में लोटते रहते थे। कहते हैं उनके मलमूत्र में सुगन्धि होती थी। परन्तु जैनियों के ऐसे गन्दे तीर्थंकर को अवतार घोषित करना कहाँ की बुद्धिमानी है? जैनी साधु नग्न रहते हैं, न स्नानादि करते हैं, न दातुन, ऐसे व्यक्ति तो जैन जैसे नास्तिक संप्रदाय की ही शोभा हो सकते हैं। किन्तु वाममार्गी वैष्णव संप्रदाय ने उन्हें अवतार माना है। धन्य हो! क्या यही भागवत की विश्वसनीयता है? अरे! अन्य अवतारों की जन्मकथा देखने से प्रश्न होता है कि उन्हें कैसे परमात्मा का अवतार मानें?

भागवत का कुछ अन्तरंग

(१) भागवत की श्लोक संख्या १८,००० और स्कन्ध १२ ऐसा बताया गया है, किन्तु सांप्रत भागवत में केवल १४,१८० श्लोक हैं, तब स्पष्ट है कि लगभग चार सहस्त्र श्लोक निकाल दिये गये हैं, तो वर्तमान का भागवत कटा-छंटा होने से प्रामाणिक पूर्ण ग्रन्थ नहीं हो सकता।

(२) सिंहगर्जना से जैसे भेड़िये भाग जाते हैं वैसे ही भागवत की ध्वनि से कलियुग के सारे दोष नष्ट हो जाते हैं। भागवत ही एक मात्र मुक्ति देने वाला है। यह भी सफेद झूठ है। क्या वेदादि और योगादि ग्रन्थ भाड़ में गये?

(३) विष्णु एवं ब्रह्मवैवर्त पुराणों में गोपियों का और राधा का श्रीकृष्ण जी के संग का बहुत अश्लील और विकृत वर्णन है। स्वामी नारायण पंथ में भी

भागवत के पंचम तथा दशम स्कन्ध को महत्व देकर कृष्ण लीला की मान्यता स्वीकार की है। स्वामी नारायण मत प्रवर्तक स्वामी सहजानन्द, जो वेद निन्दक थे, भागवत के पंचम स्कन्ध को योगशास्त्र बताते हैं और दशम स्कन्ध को भक्ति शास्त्र बताते हैं। दशम स्कन्ध में भक्ति शास्त्र तो नहीं परन्तु अधर्म प्रतिपादक शुद्ध व्यभिचार मात्र है। क्या इसे ही भक्ति कहते हैं?

(४) भागवत स्कन्ध ११ अध्याय ११ श्लोक १९-२० में सती प्रथा का समर्थन किया है। यह तो तिरस्कृत और वाममार्गीय प्रथा है, जो वेद विरुद्ध है। कृष्ण की मृत्यु के बाद वसुदेव की रानियों, श्रीकृष्ण जी की रुक्मिणी और प्रद्युम्न की स्त्री ने अपने-अपने पति की चिता के साथ स्वयं को जलाकर भस्म कर दिया था। यह सती प्रथा प्रदर्शन है। अब भागवत वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कैसे टिक सकती है?

(५) भागवत में हिरण्यकश्यपु के तरने की कथा है। प्रह्लाद ने वर मांगा जिससे पिता हिरण्यकश्यपु की २१ पीढ़ियाँ तर गयीं और भवसागर से पार हुईं, याने मुक्त हो गयीं। भागवत के ७/१० के इसी अध्याय में आगे लिखा है उस ही हिरण्यकश्यपु ने ही रावण, कुम्भकर्ण, शिशुपाल व दन्तवक्र के जन्म धारण किये हैं। जब वह राक्षस बना तो भगवान का वरदान कैसा? मुक्त होने पर फिर जन्म धारण कर राक्षस बने। क्या मुक्तात्मा की यही महिमा है?

(६) भागवत स्कन्ध २ अध्याय ९ श्लोक ३६ में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्माजी को वरदान दिया कि तुम कभी भी मोह ग्रसित नहीं होगे, परन्तु स्कन्ध १० अध्याय १३ श्लोक ४४ के अनुसार ब्रह्माजी विष्णु को मोहित करने चले गये किन्तु स्वयं ही मोहित हो गये। तब भगवान के वरदान की बात झूठ और मिथ्या सिद्ध होती है। यह तो वदतो व्याघात हुआ है।

(७) सूत पुत्र लोमहर्षण वेदव्यास के शिष्य थे। योग्यता से श्रेष्ठ बने, उन्हें सम्मान से सभा में व्यास गद्दी पर प्रवचन के लिए बैठाया गया परन्तु वहाँ पहुँचे बलराम ने उन्हें उच्चासन पर विराजमान देख और अपने आगमन पर उठ खड़े न होने के तथाकथित अपराध पर उनकी हत्या कर दी। जन्मगत जाति को मान्यता भागवत दे रहा है, जो वेद विरुद्ध है। कोई भी मनुष्य अपने ज्ञान, विद्या से

श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है। उसको उच्चासन देना यह उसकी विद्वता का सम्मान है और व्यास गद्दी पर आरूढ़ व्यक्ति का आगन्तुक को अभिवादन करना चाहिये, यह उचित है, परन्तु इसके विपरीत भागवत का कथन है। ब्रह्महत्या समान पाप कर्म का प्रदर्शन भागवत में है। देखें भागवत १०/२३ से २८।

(८) भागवत १०/६९ में श्रीकृष्ण जी ने वन्य पशुओं की हत्या कर यज्ञ में मांस का प्रयोग किया है। श्लोक ३५ के अनुसार सिन्धु देश के घोड़े पर से यज्ञ के लिए विहित वन्य पशुओं की हत्या कृष्ण कर रहे थे। भागवत स्कन्ध ९ अध्याय ६ के श्लोक ६-७-८ में श्राद्ध में मांस का उल्लेख है। श्लोक २१-३० और ३१ में अश्वमेध यज्ञ में घोड़े की बलि देना लिखा है। श्लोक ९ और १० में नरमेध का उल्लेख है। इसी भागवत में स्कन्ध ५ अध्याय २६ में यज्ञों में पशु वध का निषेध भी किया है। बताइये क्या यह भागवत सच्चा धर्म ग्रन्थ है?

(९) भागवत ३/१३-१८, १९ अनुसार ब्रह्माजी के नाक से वराह अवतार उत्पन्न हुआ। इससे तो भागवत जादुई किताब सिद्ध होती है।

(१०) भागवत ३/१२ के श्लोक २८-२९-३० अनुसार ब्रह्मा जी की पुत्री सरस्वती थी, सुन्दर कोमल थी। उस पर ब्रह्माजी मोहित हुए, पुत्री गमन करने वाला ब्रह्मा लज्जित हुआ। इस प्रकार व्यभिचार की बातें जिस ग्रन्थ में हैं, क्या वह उपेक्षित और त्याज्य नहीं है? इसी अध्याय में लिखा है, ब्रह्मा जी के भौवों से शिवजी पैदा हुए, वाह रे वाह, ब्रह्मा! पौराणिकों का मान्यवर श्रेष्ठ देवता है वह।

(११) भागवत ७-९ और ७-१० में पाँच वर्ष का बालक प्रह्लाद कामी, कामातुर बताया गया है, अरे! क्या यह भक्त प्रह्लाद पर लांछन नहीं है?

(१२) भागवत ५/२० श्लोक २, ७, १३, १८, २४, २९, ३०, ३८ में भूगोल के अन्यान्य द्वीपों का वर्णन है, जैसे मेरुपर्वत जम्बुद्वीप से घिरा है और जम्बुद्वीप बहु विस्तार वाले खारे समुद्र से घिरा है। ईख रस के समुद्र से प्लक्ष द्वीप घिरा है, शराब के समुद्र से कुशद्वीप, जिसमें कुश का एक झाड़ है, घृत समुद्र, दुग्ध समुद्र का क्रोञ्चद्वीप, क्षीरसागर से आगे बत्तीस लाख योजन वाला

शाकद्वीप है जो मट्ठे के सागर से घिरा है। पुष्करद्वीप मीठे जल के समुद्र का है इत्यादि। इससे स्पष्ट है कि भागवत लेखक भूगोल ज्ञान से शून्य था, ऐसे गपोड़ों का यह भागवत है।

(१३) भागवत ५/१७ के १५-१६ अनुसार शंकर जी की अरबों खरबों स्त्रियाँ क्रीड़ा विहार के लिए हैं। शंकर जी पर भी लांछन बताया है।

(१४) ब्रह्मा के बालों से सर्प पैदा होते हैं; मूंज पर वीर्यपात से कृपाचार्य और उनकी बहन कृपी पैदा हुई जो द्रोणाचार्य से ब्याही थी। कश्यप मुनि की पत्नी से हाथी, घोड़े, सर्प, बिच्छू, मगर, मछली इत्यादि पैदा हुए, यह भागवत ६/६ के श्लोक २६, २७, २८, २९ में लिखा है। यह सब गप्पें हैं। हिरनी के गर्भ से ऋष्यश्रृंग मुनि की पैदायश, निमि के प्रेत/शव से जनक की पैदायश (विदेह से उत्पन्न होने से वह वैदेह और मन्थन से उत्पन्न होने से मिथिला) बतायी है। नवीन वेदान्तियों की कल्पना ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या भी भागवत में (११/२८) है। और भी अनगिनत गप्पें इस भागवत में हैं, क्या ऐसा ग्रन्थ पठनीय है? यह घासलेटी साहित्य है जो पढ़ने पढ़ाने नहीं जलाने योग्य है।

भागवत में बाल कृष्ण लीला

भागवतकार कृष्ण जी को विष्णु का अवतार बताता है। पुराणों के अनुसार स्वयं विष्णु भी कोई सदाचारी सुसंस्कृत देवता नहीं थे। भागवत में कृष्ण की बाल्यावस्था की बहुत सी कल्पित कहानियाँ लिख मारी हैं।

पूतना राक्षसी ६ कोस लम्बी चौड़ी शरीरधारी थी। पूतना का स्तनपान करके उसे मार डालना भी एक चमत्कार है। यह कथा भागवत १०/६ में लिखी है।

एक दिन तृणावर्त नामक चक्रवात दैत्य गोकुल में आया। वह बाल कृष्ण को आकाश में उड़ा ले गया। वहाँ कृष्ण ने उसका गला दबोच कर उसे मार डाला, यह कथा भागवत १०/७ में दी है। भागवत १०/१० में कथा आती है कि बालक कृष्ण जी ऊखल को रस्सी से अपने कमर में बाँध कर चल रहे थे कि रामलार्जुन नामक दो महावृक्ष उस ऊखल से टकराये। ऊखल के धक्के से वे दोनों वृक्ष गिर पड़े इसे ही रामलार्जुन उद्धार कहा है।

एक बगुले ने बाल कृष्ण को निगल लिया, तब कृष्ण ने उसका तालु जलाया, उसके पेट से बाहर आया और उसकी चोंच चीर डाली, वह मर गया। उस बगुले का बकासुर उद्धार नामक कथानक भागवत १०/११ में है।

बकासुर का भाई अघासुर मुँह फाड़ कर बैठा था, सारे ग्वाल बालादि उसके मुँह में चले गये, कृष्ण भी उसके पेट में चला गया। उसके पेट में कृष्ण ने अपना शरीर इतना फुलाया कि अघासुर का मुँह रुंध गया जिससे वह मर गया। यह मूर्खतापूर्ण कहानी भागवत १०/१२ में है।

इसी प्रकार एक कहानी कालिया मर्दन की है जो भागवत १०/१५ के १६ व १७ श्लोक में है। गगण सांड को मारने की कथा अरिष्टासुर वध के नाम से १०/१६ में दी है।

कृष्ण जी सात वर्ष के थे तब गोकुल वुन्दावन में अतिवर्षा हुई। अतिवर्षा के कारण गोवर्धन पर्वत उखाड़कर कृष्ण जी ने अंपनी हथेली पर रख लिया, इस कारण कृष्ण जी का गिरिधारी नाम प्रसिद्ध हुआ। विचार करें कि क्या कभी पहाड़ भी उखाड़ा जा सकता है? यह कहानी भागवत १०/२५ में देखें।

भागवत स्कन्ध १०-अ. २ के श्लोक ८ और १५ में एक बड़ी विलक्षण जादुई घटना का वर्णन है। भगवान विष्णु के आदेश से वसुदेव जी की पत्नी जो देवकी थी, उसका गर्भ योगमाया से निकाल लिया गया और उस गर्भ को रोहिणी जो वसुदेव जी की दूसरी ज्येष्ठ पत्नी थी, उसके गर्भाशय में स्थापित कर दिया गया। क्या बात है कि दोनों को भी पता नहीं हुआ। कितनी सुन्दर गप्प पौराणिकों के तथाकथित धर्मग्रन्थ में विद्यमान है।

यह सब बाल कृष्ण की लीलाऐं हैं जो केवल मात्र गप्पाष्टक हैं। ऐसे गपोड़ों पर आज के विज्ञान युग में कौन विश्वास करेगा? इस प्रकार की किस्से कहानियाँ बच्चों का मनोरंजन कर सकती हैं। क्या इन्हीं कारणों से भागवत अवैज्ञानिक, काल्पनिक, बुद्धि बाह्य, तर्कशून्य और चमत्कृति पूर्ण होने से पद दलित और घोर अपमानित नहीं होता है? इसी को कहते हैं—

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा।

संक्षिप्त कहानियाँ

(१) भागवत ५/४१ में वत्सहरण की कथा दी है।

(२) भागवत १०/७/७३ में गृहस्थाश्रम की निन्दा है। जो गृहस्थाश्रम इस प्रकार मनु महाराज ने सराहा है, यथा **वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्व जन्तवा। तथा गृहस्थाश्रमम् आश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमा:॥** विधिपूर्वक गृहस्थाश्र धारण करना भागवतकार को स्वीकृत नहीं है, कारण वह तो पर नारी गमन, वेश्यागमन आदि व्यभिचार को बढ़ावा देता है। उसे गृहस्थाश्रम का सदाचारी जीवन कैसे भायेगा ?

(३) भागवत १०/६३ में बाणासुर की कथा है जिसमें भगवान शिव-शंकर की निन्दा की है, जैसा कि लिखा है श्रीकृष्ण ने शिव शंकर को परास्त कर दिया। यह शैव और वैष्णवों का द्वन्द्व है।

(४) भागवत १०, १३, १४ में हंसावतरण की कथा है।

(५) भागवत १०/८६ में सुभद्राहरण की कथा है। बलराम और कृष्ण की बहन सुभद्रा थी। बलराम अपनी बहन का विवाह दुर्योधन से करना चाहता था। यह बात अर्जुन को मालूम पड़ी। अर्जुन ने भिक्षुक का रूप धारण किया और द्वारिका पहुँचे, आसन जमाया, परन्तु कृष्ण जी ने उन्हें पहचान लिया। तब कृष्ण जी ने उन्हें अतिथि महात्मा के रूप में भिक्षा के लिए आमंत्रित किया। सुभद्रा ने भिक्षुक का तेजस्वी, ओजस्वी, कांचन रूप, कान्त शरीर देखा तो वह उस पर मोहित हो गई, आसक्त हुई, फिर उसका हरण हो गया। कितनी अच्छी शिक्षा है ?

(६) भागवत १०/८८ में भस्मासुर की कथा है। भगवान शिव ने उसे वर दिया था, परन्तु उस दुष्ट ने शिवजी से ही कामचेष्टा की तब भस्मासुर के भय से भगवान शिव कैलाश छोड़कर वन में चले गये, तब विष्णु ने उनकी रक्षा की। यह भी शैवों पर वैष्णवों का दाँव है।

(७) रास मण्डल कथा भाग १०-२२ २३ में है। उसके चीर हरण लीला से श्रीकृष्ण जी की निन्दा हुई है। भागवत १०-२२ अध्याय में कृष्ण जी ने

पराई स्त्रियों के साथ लीला की है और स्त्रियों को नग्न देखा, इसके विपरीत भागवत १०-२२-२९ में सर्वज्ञ कृष्ण कभी ऐसा घृणास्पद निंदित कर्म नहीं कर सकता, ऐसा भी लिखा है। यह तो दो मुखी बात है, जिससे भागवत की प्रामाणिकता समाप्त हुई है।

(८) भागवत ११-१३-१९ (तथाग्रे) ब्रह्माजी को अज्ञानी कहा है।

(९) भागवत ११-१४ के १८-२५ में भक्तिरेव मोक्षदात्री इति लिखा है। यह वेद विरुद्ध है, क्योंकि केवल भक्ति ही मोक्षदायिनी है यह कथन वेद विरुद्ध है। ज्ञान, कर्म,उपासना यह त्रयी विद्यायें हैं। बिना ज्ञान के कर्म ठीक न हो और यदि उपासना/भक्ति को ही कर्म मान लें तो भी बिना ज्ञान के सुष्ट और शिष्ट बनता नहीं। कहा है, नहीं ज्ञानान् मुक्तिः। बिना ज्ञान के मुक्ति संभव नहीं। भागवत के अन्धश्रद्धालु भक्तों ने इस पर अवश्य विचार करना चाहिये, अन्यथा बाबा वाक्यम् प्रमाणम् या सत् श्री वचन महाराज की उक्ति, गर्त में गिरायेगी जैसा कि इस भ्रष्ट भागवत से हो रहा है।

श्रृंगार रस प्रधान कथायें

भागवत १०-४७ के ५९ वें श्लोक में क्वेमा स्त्रियो वनचरी व्यभिचार दुष्टाः ऐसा लिखा है। अर्थात् गोपियाँ वनवासी, व्यभिचारिणी और दुष्ट औरतें थीं। १०-२९- ११ के अनुसार उन व्यभिचारिणी गोपियों का कृष्ण जी में व्यभिचार भाव कृष्ण जी जैसा ही रहता था। १०-२२-४ के अनुसार गोपियों की कृष्ण जी को पति बनाने की प्रार्थना है। इस व्यभिचार भावना पूर्तिस्वरूप रास क्रीड़ायें रचाई जाती थीं, जल क्रीड़ा भी होती थी। अति प्रसिद्ध परन्तु उतनी ही घृणित कृष्ण कलंकित घटनायें पढ़ें, इसलिए कि समाज, स्त्री जाति और समस्त हिन्दू जाति को उनसे बचाया जा सके। साथ ही आप्त महापुरुषों को चरित्र कलंक से बचाया जा सके।

भागवत सुनो, पापी बनो।

भागवत १०/२२ के १६ से २३ पर्यंत चीर हरण कथा

एक समय कुछ गोपियाँ यमुना जल में पूर्ण नग्न होकर स्नान कर रही थीं।

उनके सारे वस्त्र किनारे पर रखे हुए थे। इसी समय कृष्ण जी वहाँ पहुँचे। कृष्ण ने सारे वस्त्र उठाये और निकटस्थ वृक्ष पर धर के वृक्ष पर बैठ गये। जाड़े की उस ऋतु में गोपियों ने विनयपूर्वक विनती की, कि हमारे वस्त्र दे दो। कृष्ण ने निर्लज्ज होकर कहा कि जल से बाहर आकर ले जाओ। बहुत अनुनय और प्रार्थना करने पर भी वस्त्र नहीं मिले तो वे सब विवश हुईं और अपने दोनों हाथों से अपने गुप्तांगों को ढककर बाहर आयीं फिर वस्त्र मांगे। तब कृष्ण ने उनके साथ खिलवाड़ की। कृष्ण ने कहा, तुम तेरी दासी बनती हो तो मैं जैसा कहूँ वैसा करो, यहाँ आकर वस्त्र ले जाओ। गोपियाँ जल से बाहर शीत वायु में थर-थर कांप रही थीं, तब वे अपने दोनों हाथ अपने गुप्तांगों पर धर कर कृष्ण के पास गयीं। कृष्ण बोले– तुमने नग्न होकर स्नान करने से वरुण देवता का अपमान किया है। अत: अपने हाथ गुप्तांगों से हटाओ और हाथ सिर से लगा कर प्रणाम करो, तब कपड़े मिलेंगे। विवश गोपियों ने अपने हाथ ऊपर उठाकर प्रणाम किया, तब कृष्ण प्रसन्न हुए और वस्त्र दे दिये। वस्त्र पहनकर वे कृष्ण के साथ समागम करने लगीं। कृष्ण ने यह भी कहा कि आगामी शरद ऋतु की शीत रात्रियों में मेरे साथ विहार करना।

तथाकथित भागवत कथाकार कहते हैं कि यह घटना कृष्ण के अबोधपन की है और कृष्ण ने मजाक, खिलवाड़ के छल से उन गोपियों का लज्जा संकोच छुड़ाया। अत: विचार करें – कोई भी युवती किसी भी प्रकार पूर्णता से यमुना जैसे सार्वजनिक स्थल पर नग्न हो ही नहीं सकती। वास्तव में व्यवहार में ऐसा कभी नहीं होता। यदि अपनी स्त्री या प्रेयसी भी स्नानागार में स्नान करती हो तो, सभ्य, समझदार पति, प्रियकर या बेटा, बेटी भी उस स्थान को खोल नहीं सकते। यह स्त्री/महिला या नारी दाक्षिण्य आज भी पुरुषों में विद्यमान है। राक्षसी और पिशाच पुरुष भी ऐसा नहीं करते, यह सामाजिक बंधन आज भी पालते हैं। परन्तु कृष्ण की लज्जा तो भागवत लेखक और भागवत कथाकारों ने बेच खाई है। साथ में स्वयं की भी लज्जा चौपट कर दी है। आज कल यदा-कदा यत्र-तत्र समाचार पत्रों में ऐसा वृत्तान्त पढ़ने को मिलता है कि ग्राम पंचायत के निर्णयानुसार एकादि दुराचारी व्यभिचारिणी युवती को नग्न या विवस्त्र किया जाता है और कहीं कहीं गाँव प्रदक्षिणा भी उससे कराई जाती है। पंचायत

निर्णयानुसार यह गाँव समाज के सदाचार प्रति जागृतता स्याद् होगी ताकि इससे सब सबक सीखें, परन्तु फिर भी कोई व्यक्ति कानून को अपने हाथ में नहीं ले सकता, यह अपराध ही है।

गोपियाँ व्यभिचार भाव रखती थीं, यह भागवत ने प्रकट किया है, तब ऐसी कदाचारी गोपियों को अपने गुप्तांगों पर से हाथ हटाने यदि कृष्ण ने कहा तो गलत तो नहीं किया ही नहीं, और उनका लज्जा संकोच दूर किया ऐसा टूटा फूटा समर्थन तथाकथित सदाचारी भी कर सकते हैं। परन्तु यह कृत्य सभ्यता, शिष्टता के पूर्णत: विरुद्ध है और भारतीय दण्ड संहितानुसार दण्डनीय अपराध है। युवतियों से या महिलाओं से छेड़छाड़ भी अपराध ही है और जहाँ स्त्रीत्व, इज्जत और अस्मत का प्रश्न आता है, वहाँ तो यह भयंकर अपराध की कोटि में आना ही है। बस यही कार्य भागवतकार ने कृष्ण जी से कराया, जो सुसंस्कृत, सुशिक्षित समाज में लांक्षनास्पद है। यह भी तो महापुरुष कृष्ण जी के चरित्र पर कलंक है।

यदि आज किसी सिरफिरे और मनचले कृष्णानुकरण करने वाले युवक ने गंगा किनारे स्नान करती युवती के वस्त्र उठाये और अपना आदेश पालने को उसे बाध्य किया, तो क्या वह अपराध नहीं होगा? क्या उसे सच्चा कृष्ण भक्त समझ कर क्षमा कर प्रोत्साहित करेंगे? अजी, पुलिस तो अपराध कायम करेगी ही, उससे पूर्व किनारे पर उपस्थित लोग ही उस ढोंगी या सच्चे कृष्ण भक्त की पीठपूजा यथासांग और मनसोक्त कर देवेंगे। कारण स्पष्ट ही है कि यह गर्हित और घृणित कृत्य समाज की आचार संहिता के विरुद्ध होने से मानवता को कलंकित करता है। कृष्ण ने गोपियों को अपने हाथ गुप्ताओं से हटाकर सिर पर ले जाकर प्रणाम करने का आदेश दिया था। तब सब ने गुप्तांगों से हाथ उठाये या नहीं, यह तो कृष्ण को देखना जरूर ही था, ऐसी स्थिति में युवती गोपियों के गुप्तांगों का प्रत्यक्ष नग्न दर्शन कृष्ण जी ने करना स्वाभाविक था। कहते हैं पैसा लेकर शरीर विक्रय करने वाली वेश्याएँ भी अपने गुप्तांग का नग्न दर्शन छुपाती हैं। तब यह दुष्कृत्य कृष्ण जी से भागवतकार ने कराया है जो विशुद्ध अनैतिक, अवांछनीय एवं गर्हणीय है। ऐसी गंदी बातें जिस ग्रन्थ में हों उसे पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने में पाप ही लगेगा। क्या तुम्हारे कृष्णभक्तित्व का यह द्योतक होगा?

भागवत में रास क्रीड़ा

(भागवत १०/२९-३०-३१-३३ में अन्यान्य श्लोकानुसार)

रात्रि के चन्द्र प्रकाश में यमुना किनारे कपूर समान धवल मृदु बालु/रेत के तट पर उत्तम वस्त्र अलंकारादि से श्रंगारित गोपियों का कृष्ण जी के साथ प्रवेश हुआ। वह स्थल जल तरंगों से शीतल और कुमुदिनियों की गंध से भरपूर सुगंधित था। कृष्ण ने वहाँ गोपियों के साथ रमण (विषय भोग) किया। बाहें फैलाना, आलिंगन करना, उनके हाथ दबाना, चोटी पकड़ना, उन्नत उरूस्थल मसकाना, जाघों पर हाथ फेरना, नाखून से उनके अंगों से रंगरेलियाँ करना आदि क्रियाओं द्वारा कृष्ण जी ने गोपियों में कामदेव को खूब अच्छी तरह से जागृत कर उनके साथ रमण (विषय भोग) किया।

कृष्ण जी की रास क्रीड़ा कलाप देखकर देवताओं की पत्नियाँ भी कामार्दित हो गई थीं। कामदेव की तेज उग्र आवेग भरी इच्छायें पैदा हो जाने से उन गोपियों के शरीर काम रस से गीले हो गये। चन्द्रमा भी यह सब देखकर चकित रह गया। तब अतिरमण और अतीव भोग से गोपियाँ थक गईं तो उन्हें पसीना आया। कृष्ण जी ने अपने कोमल हाथों से उन प्रेमिकाओं के मुँह पोंछे, तब उन गोपियों ने कृष्ण जी के शीतल हाथ अपने स्तनों पर रख लिए। वाह वा, क्या खूब। कृष्ण जी का अवतार धर्म स्थापना,सज्जनों की रक्षा के लिए हुआ था या पर नारियों के साथ विषय भोग करने के लिए हुआ था? कौन सी बात सच मानें? किसी ने ठीक ही कहा है—

भागवत की है यही पुकार। पढ़-सुन करें दैत्याचार॥

भागवत अध्याय १ श्लोक ७५ के महात्म्य प्रकरण में — नारद जी ने पूछा कि कलियुगी सनातनी पंडितों का रमण/ विषय भोग करना कैसा है? भागवत में लिखा है, पण्डितास्तु कलत्रेण रमते महिषा इव। अर्थात् कलियुगी पण्डित स्त्रियों से भेंसे के समान भोग करते हैं।जैसा भैंसा भेंस के गुप्तांग को सूंघ-सूंघ कर बेहिसाब भोग करता है, क्या वर्तमान में यह सनातनी पण्डित ऐसा ही पशुतुल्य भोग करते हैं? अरे! भागवत ने इन पण्डितों को भी छोड़ा नहीं, लताड़ा है। इसमें ब्राह्मणों की भी निन्दा की है। अत: सच तो यह है कि वे पण्डित

महान दोषी हैं जो ऐसा दूषित अधम साहित्य धर्म के नाम पर जनता को सुनाते हैं। उन्होंने तो इस ग्रन्थ को अग्नि में स्वाहा करना चाहिये। कुछ पौराणिक पण्डित सफाई देते हैं कि रास क्रीड़ा में सदाचार ही रहता था, यदि ऐसा न होता तो पति लोग अपनी पत्नियों को कृष्ण जी के पास रात्रियों में रमण करने क्यों जाने देते? प्रश्न तो बहुत अच्छा है? अब इसे पण्डितों का छल-छद्म कपट मानें या भागवत में जो-जो लिखा है और जिस-जिस प्रकार लिखा है, उसे मानें? गोपियों के पति समझते थे कि गोपियाँ उनके अपने ही घर में विद्यमान हैं। परन्तु ग्रन्थ में यह भी लिखा है कि पतियों के मना करने पर भी गोपियाँ कृष्ण जी के पास चली जाती थीं। असह्य कामभोग का चस्का लग गया फिर क्या था—जहाँ कृष्ण वहाँ गोपी। इसकी पुष्टि में भागवत १०-४२ के श्लोक ७ से १२—कुब्जा कुबड़ी थी परन्तु भरे पूरे यौवन से सम्पन्न, लावण्यवती एवं सुन्दर थी। कृष्ण जी ने उसके दोनों पावों पर भार देकर उसकी ठुड्डी को (गर्दन के लिए) ऐसा झटका दिया कि वह सीधी सरल हो गई। उसी समय कुब्जा में कामाग्नि जागी और वह कृष्ण जी पर आसक्त हो गई। कुब्जा ने कृष्ण जी को घर चलने कहा। कृष्ण जी बोले—तुम ससांरी लोगों की मानसिक परेशानी मिटाती हो। कहा है कि कुब्जा सजधज कर बैठी थी। कृष्ण जी के पास गई। कृष्ण जी ने उसे अपने खाट पर डाल लिया और उसके साथ रमण करने लगे। कुब्जा के छाती से चिपटे आनन्द मूर्ति, यहाँ व्यभिचारी मूर्ति, कृष्ण जी को कुब्जा ने अपने दोनों हाथों से प्रगाढ़ आलिंगन किया, जिससे उसने अपना विरह ताप शान्त किया। कुब्जा बोली—आप अभी यहीं पर मेरे साथ रहो, मैं आपका साथ नहीं छोड़ सकती।

इस वर्णन से कृष्ण जी का कुब्जा से समागम हुआ था, यह सिद्ध है। ब्रह्मवैवर्त पुराण और पद्म पुराण में तो इससे भी भयंकर कामासक्ति का वर्णन है। कृष्णजी द्वारा वेश्या गमन का पैशाचिक कार्य सम्पन्न कराया। कैसा भागवत ग्रन्थ है और कैसा कलंक उस महापुरुष को लगाया है, विचार करें।

१६,१०८ पत्नियाँ—बहुपत्नीत्व का दोष—भागवत स्कन्ध १० अध्याय ५९ श्लोक ३३, ३४-४२ भौमासुर ने जिसे नरकासुर भी कहा जाता है, उसने अन्यान्य राजाओं से १६,१०८ कुमारियाँ छीन कर कैद कर रखी थीं। जब उन

राजकुमारियों ने कृष्ण को देखा तो मन ही मन उन्हें अपना पति स्वीकार कर लिया। कृष्ण ने भौमासुर के बन्दीगृह से उन्हें मुक्त किया, फिर कृष्णजी ने एक ही मुहूर्त में एक ही साथ सामूहिक विवाह पृथक रूप धारण कर स्वयं को उनके साथ परिणय सूत्र में बद्ध कर लिया। भागवत ३/३/९ के अनुसार कृष्ण ने उन १६,००० पत्नियों से प्रत्येक के गर्भ से १०-१० सुन्दर पुत्रों को पैदा किया। १०-४९-४३ के अनुसार कृष्णजी उन सभी के साथ साधारण संसारी गृहस्थ समान विषय भोग करते थे। धन्य हो भागवतकार! और धन्य हों पढ़ने सुनने वाले।

कृष्ण जी की आठ पटरानियाँ

भागवत स्कन्ध १० अध्याय ९० श्लोक २९-३० अनुसार कृष्ण जी की रुक्मिणी समेत आठ पटरानियाँ थीं, उनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

(१) **रुक्मिणी**: विदर्भ क्षेत्र के राजा भीष्मक की राजकन्या थी। रुक्मिणी का अर्थ जिसका शरीर वर्ण कांचन जैसा चमकीला हो उसे कहते हैं। रुक्मिणी के पिता और बन्धु उसका विवाह शिशुपाल से करना चाहते थे। परन्तु रुक्मिणी को यह पसन्द नहीं था, उसने मन ही मन में कृष्णजी को वर लिया था। परिणामत: स्वयंवर में (देखें भागवत १०/५२-५३) कृष्ण जी ने उसका हरण कर लिया और विवाह किया। १२ वर्ष की तपश्चर्या के बांद कृष्ण जी ने रुक्मिणी की इच्छापूर्ति स्वरूप एक पुत्र पैदा किया जो ठीक कृष्ण जी के समान था, उसका नाम प्रद्युम्न रखा था।

(२) **कालिन्दी**: भागवत १०/५८ यह सूर्य की पुत्री थी, तपस्विनी थी, उसे कृष्णजी ले आये थे और विवाह किया था।

(३) **मित्र वृन्दा**: (१०/५८) यह कृष्ण जी की बुआ से जन्म पाई और फुफेरी बहन थी। कृष्ण जी ने उसे बलपूर्वक स्वयंवर से लाकर विवाह किया था।

(४) **सत्या**: (१०/५८) यह राजा नग्नजित की पुत्री थी, राजा ने स्वयं उसका विवाह कृष्ण जी के साथ कर दिया था।

(५) **भद्रा:** कृष्ण जी की दूसरी बुआ श्रुतिकीर्ति जो केकय देश में ब्याही थी, उसकी यह पुत्री भद्रा थी। राजा ने स्वयं उसका विवाह कृष्ण जी के साथ कर दिया था। (१०/५९)

(६) **लक्ष्मणा:** (१०/५९) यह भद्र देश के राजा की पुत्री थी, स्वयंवर से बलपूर्वक कृष्णजी ने हरण कर विवाह किया।

(७) **सत्यभामा:** (१०/५६) राजा सत्राजित ने स्वयं अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह कृष्ण जी से कर दिया था।

(८) **जाम्बवती:** (१०/५६) जाम्बवन्त यह रीछ था, उसकी रीछ पुत्री जाम्बवती थी। इसको विवाहार्थ जाम्बवन्त ने कृष्णजी को भेंट किया था।

अचरज की बात है कि कृष्ण जी ने रीछ पशु की पशु पुत्री से विवाह किया। पशु पुत्री के साथ मैथुन (पशुवत ही किया होगा) कर साम्ब नामी पुत्र पैदा किया। धन्य हो! मनुष्य का पशु से विवाह और संभोग भी। अरे! क्या क्या कलंक कृष्णजी पर ढाया, इसकी तो सीमा ही नहीं। कुछ तो लज्जा करो।

कृष्ण जी की यह आठ पटरानियाँ थीं। ऊपरी बातों से कृष्ण जी अत्यन्त लम्पट, विषयी, कामी, पर नारी गामी, वेश्यागामी, भोगविद्या प्रवीण, भोगेश्वर, पतित और भ्रष्ट चरित्र थे। कैसे कैसे काल्पनिक, मनगढ़न्त आक्षेप कृष्ण जी पर किये हैं जिससे मानवता का हनन और पिशाच वृत्ति का पोषण हुआ है, क्या यही सनातनियों के १६ कला के पूर्णावतार हैं? तब क्या यह सच नहीं होता कि सनातन धर्म यह व्यभिचार धर्म या संभोग धर्म का ही दूसरा नाम है? किसी ने सच ही कहा है—

भागवत की यही ललकार। कलंकित कृष्ण जय जयकार॥

विषयांकित संकीर्तन

पौराणिक वैष्णवों के तीन महापुराण मान्यता प्राप्त हैं। वे श्रीमद् भागवत, ब्रह्मवैवर्त पुराण और विष्णु पुराण हैं। वास्तविक राधा नाम का कोई पात्र भागवत में नहीं है, यह ब्रह्मवैवर्त पुराण में है। जैसा कि प्रथम लिखा है, राधा रिश्ते में

कृष्णजी की मामी लगती थी। ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कृष्णजी बचपन से ही ३३ वर्ष की राधा से रतिक्रीड़ा करते थे। इस राधा के नाम से पौराणिक संकीर्तन चलता है। जो उचित तो नहीं पर विषयी जान पड़ता है।

(१) राधा कृष्ण, गोपाल कृष्ण।

(२) गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय। राधा रमण हरि गोविन्द जय जय। (राधा से रतिभोग करने वाले कृष्ण जी की जय हो।)

(३) राधे कृष्ण गोपाल कृष्ण। कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

(४) गोपीवल्लभ, राधावल्लभ, राधेश्याम (सबको कामी कर भगवान)।

(५) राधे, राधे! (रटने वालों का जैसा कोई सम्बन्ध राधा से है)।

राधा कृष्ण बोलना अनुचित है। किसी की पत्नी का नाम किसी के पति के साथ जोड़ना, पाप करना ही है।

गीत गोविन्द यह वैष्णव सम्प्रदाय के वल्लभ शाखा का मान्य ग्रन्थ है। यह श्रृंगार रस प्रधान है। इसमें लिखा है –राधा और कृष्णजी के बीच में रतियुद्ध हुआ। युद्ध के अन्त में राधा की बाहें शिथिल हो गईं, छाती धड़कने लगी, राधा की जांघ स्तब्ध और शान्त हुईं। गोपियों के लिए लिखा है– गोपियों के उन्नत स्तनों का मर्दन वनमाली कृष्ण जी करते थे।

गोपाल सहस्त्र नाम

इसमें लिखा है– राधा रतिसुख उपेति राधा कामफल अदः। राधालिंगन संमोहे। अर्थात् कृष्ण जी राधा का आलिंगन करते थे, उसे कामफल और रतिसुख प्रदान करते थे। इसमें कृष्णजी के लिए विशेषण लिखे हैं। गोपाल, कामिनी जार, चौर जार शिखामणि। इन सब वर्णन से केवल वाम मार्ग प्रचलन सिद्ध होता है। वाममार्गी जिस प्रकार स्त्री समागम के समय कहते हैं कि अहं भैरवः, त्वम् भैरवी, उसी तरह वैष्णव वल्लभ संप्रदाय में प्रचलित है, कृष्णो अहं भवतां राधा, तावयो अस्तु संगमः।

ब्रह्मवैवर्त पुराण

इसमें तो बहुत कमाल और गजब का लिखा है। ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खण्ड ४ अध्याय २९ त्रयोदशी की रात को राधा कामातुर हो गई, स्वयं का होश कामान्धता में खो गई, राधा कामानन्द में मस्त हो गई, राधा कृष्ण जी के पास गई तब कृष्णजी ने राधा को अपनी छाती से लगाकर आलिंगन दिया। कृष्णजी ने बड़ी मदभरी नजरों से राधा का चुम्बन लिया, विषय भोग हुआ, विविध प्रकार से मैथुन क्रिया हुई, (क्या कृष्ण जी कामशास्त्र के पूर्ण पण्डित थे?)। राधा के स्तनों को नोच नोच कर काम को जगाते रहे, राधा के लहंगे की डोरी खुल गई, उसके सुन्दर वस्त्र छुट गये। नौ प्रकार के आलिंगनों से और आठ प्रकार के चुम्बनों से राधा को मदमस्त कर दिया, अंग से अंग और प्रत्यंग मिलाकर दोनों लिपट गये। राधा के साथ सोलह प्रकार से कृष्ण जी ने विषय भोग किया। अस्तु। इस प्रकार लिखने से तो कृष्ण जी के चरित्र का संपूर्णत: हनन हुआ है। इसी पुराण के अध्याय ३ में यह लिखा है कि गोलोक की राधा ने व्यभिचारी कृष्ण को शाप दिया। राधा प्रेयसी है, प्रेम रति भी करती है और शाप भी देती है। देख लिए, विष्णु भक्त कहलाने वाले वैष्णवों के भागवत के साथ अन्यान्य ग्रन्थों के लज्जास्पद विचार और वर्णन। यह सब भागवतादि पुराण पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने योग्य नहीं हैं। इन्हें तो जला देना चाहिये। किसी कवि ने ठीक ही कहा है —

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से।
इस घर में आग लग गई घर के चिराग से॥

तब अन्य मत मतान्तर वालों से क्या कहें? उनके तथा सत्य सनातन वैदिक धर्मी आर्य समाजियों के सामने इन पौराणिकों की धज्जियाँ उड़ाई जाती हैं और यह भागवतादि पण्डित दुम दबाकर मैदान छोड़कर भागते हैं। क्यों न भागें, इनके काले करतूत जो हैं। महापुराण भागवतादि से तो भोली-भाली अन्ध श्रद्धालु हिन्दू जाति में धर्म के स्थान पर और नाम पर अधर्म का प्रचार खुले आम हो रहा है, अत: बुद्धि और तर्कवादी समझदार पौराणिक बन्धुओं ने और पण्डितों ने इन धार्मिक दोषों के निवारणार्थ सतत प्रयत्न करना आवश्यक है। ऐसे ग्रन्थों का तिरस्कार कर उनका बहिष्कार करना अनिवार्य है। स्वामी दयानन्द सरस्वती

जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास में दृढ़ता से स्पष्ट किया है कि महाभारत के कृष्ण जी जैसा निष्कलंक स्फटिक समान धवल उज्ज्वल चरित्र देखने को नहीं मिलता और कृष्ण जी के चरित्र को कलंकित करने वाला यह लेखक माता के गर्भ में ही मर जाता तो अच्छा होता। अस्तु। स्वामी दयानन्द जी जब ग्वालियर आये थे तब महाराजा जियाजी राव सिन्धिया ने भागवत के १०८ पारायणों का बड़ा भारी आयोजन किया था। स्वामी दयानन्द जी ने निर्भीकता से राजा से कहा —हे राजन! अनार्ष ग्रन्थों की कथा का परिणाम और फल दु:ख और क्लेश होता है। जब भागवत पारायण समाप्त हुआ तब राज्य में विशूचिका (कॉलरा) का भयंकर प्रकोप हुआ था।

भागवत कथाकारों से प्रश्न

भागवत कथाकार, तथाकथित विद्वान पण्डितों से उनके विचारार्थ तथा भागवत भक्तों से आचारणार्थ कुछ प्रश्न इस प्रकार प्रस्तुत हैं —

भागवत १०/७०/४ से ६ में कृष्णजी की प्रात:कालीन दिनचर्या लिखी है। कृष्णजी प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्त में उठकर परमात्मा का ध्यान करते थे। स्नानादि प्रातर्विधि के पश्चात् ब्रह्मयज्ञ, संध्यावंदन फिर अग्निहोत्र कर मौन होकर गायत्री का जाप करते थे। भागवत १०/४५/२६ के अनुसार पिता वसुदेव ने अपने दोनों पुत्रों का यज्ञोपवीत/जनेऊ संस्कार अपने पुरोहित गार्गाचार्य से कराया था। भागवत १०/४५/३१ से ३६ के अनुसार बलराम और कृष्ण दोनों भाइयों ने कश्यप गोत्रोत्पन्न अवन्तीपुरी/उज्जैन में सन्दीपनि मुनि के गुरुकुल में चारों वेद, धनुर्वेद, धर्मशास्त्र, तर्कादिशास्त्र की शिक्षा पूर्ण की थी। भागवत ६/१/४० में लिखा है —वेद प्रणहितो धर्म:, हि अधर्म: तत् विपर्यय:। भागवत ७/१/६-७-८ में परमात्मा को निगुर्ण अजन्मा अव्यक्त और प्रकृति से परे माना है। अब पण्डित जी बताइये (१) क्या आप वेद मन्त्रानुसार ब्रह्मयज्ञ/संध्या करते और कराते हो? पौराणिक संध्या में कृष्णाय नम:, गोविन्दाय नम:, माधवाय नम:, केशवाय नम:, अच्युताय नम: इस प्रकार कृष्ण जी के नामों का उल्लेख कर नमन करते हैं, क्या कृष्ण जी अपने ही नामों से अपने आप को ही नमन करते थे? कृष्ण जी (वैदिक) वेद मन्त्रों से संध्या/वन्दन करते थे, जो आप स्वयं न करते हो न कराते हो। (२) कितने भागवतकार प्रतिदिन नित्य

अग्निहोत्र करते हैं और भक्तों से कराते हैं? (३) कितने पण्डित गायत्री मन्त्र भक्तों को विशेषत: स्त्री वर्ग को सिखाते हैं? अरे आपने तो स्त्री वर्ग पर गायत्री जपने का प्रतिबन्ध लगाया है, ऐसा क्यों? (४) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों वर्णों को जनेऊ धारण कर द्विज कहलाने का अधिकार है जैसा कि कृष्णजी का हुआ था। क्या आप इन वर्णों का उनका अधिकार प्रदान करते हो? आप तो यजमान के हाथ में मौली/रंगीन धागा बांधकर उसे जनेऊ से वंचित करते हो। मौली (कलावा) बांधना किस शास्त्र के आधार पर चल रहा है? (५) क्या आप वेद धर्म स्वयं जानते हो और यदि जानते हो तो भक्तों को जनाते क्यों नहीं? क्या आप भक्तों का, महिला वर्ग का, उद्धार और उनके आत्मोन्नति और कल्याण का वैदिक धर्म उन्हें बताते हो? ध्यान रहे वेदों में ऋषि हैं वैसे ही ऋषिकायें भी हुई हैं, वेदों से स्त्री वर्ग वंचित नहीं, **स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ** ऐसा वेदमन्त्र में कहा है। क्या आप ईश्वर के सत्य निराकार स्वरूप का ही दृढ़ और आग्रही प्रतिपादन से भक्तों को जड़ साकार पूजा से छुड़ाते हो? अपने आप से पूछो, मनन चिन्तन से जानो कि भागवत पढ़कर हम क्या कर रहे हैं और हमें क्या करना चाहिये?

भागवतानुसार मूर्तिपूजक गदहे हैं

भागवत के अनुसार मूर्ति पूजक गदहे हैं। भागवत १०/८४-१० जो अपने इष्ट देव परमेश्वर को प्राणियों के हृदय में न देखकर केवल मूर्ति विशेष में ही उसका दर्शन करते हैं, उन्हें इष्ट पूजन कैसे प्राप्त है? १०/८४-११ के अनुसार मिट्टी पत्थर ही की प्रतिमायें देवता नहीं होती। १०/८४-१३ के अनुसार यस्मात्म बुद्धि.....गोखर:। जो धातु, पाषाण, मिट्टी की प्रतिमाओं को ईश्वर समझ कर ईश्वर का दर्शन करना चाहते हैं वे गौ का चारा ढोने वाले गदहे हैं। क्या वर्तमान पौराणिक पण्डित/भागवत कथाकार स्वयं जानकर अपने मूर्तिपूजक श्रोताओं को यह प्रामाणिकता से सुनाते हैं और उन्हें इस जड़ मूर्ति पूजा के कारण गदहे बनने के एवज में उन्हें सत्यज्ञानी बनाने का प्रयास करते हैं? परन्तु यह अन्धश्रद्धा दूर करने से तो पंडितों की दुकानदारी बन्द हो जावेगी और क्षीर के साथ मालपुओं का भोग भी बन्द हो जायेगा, क्यों यह भय लगता है? हे मूर्तिपूजको! पाकिस्तान में, बांगला देश में और कश्मीर में आपके देवताओं के

मन्दिर नष्ट भ्रष्ट हुए हैं कि नहीं? इतिहास की साक्षी है कि कई मन्दिर जमींदोज़ कर लूटे गये हैं, आये दिन मन्दिरों में भगवान के सोने चाँदी के आभूषण चुराये जाने के समाचार मिलते हैं। इतना ही नहीं तो भागवत में भी तुम्हें गधा कहा है, तब सोचो, समझो और सत्य का ग्रहण कर वेदमार्ग पर चलो।

भागवत की महिमा ऐसी वर्णन की है कि उसको वेदरूपी कल्पतरु का फल माना है। वेदव्यास के सुपुत्र महामुनि ब्रह्मचारी विरक्त शुकदेव जी के मुख से यह भागवत ज्ञान हमें प्राप्त हुआ है। वैष्णवों की मान्यता है कि भागवत महापुराण है। ऐसा भी मानते हैं कि मनुष्य जन्म पाकर यदि भागवत सुना या पढ़ा नहीं तो यह जीवन सार्थक नहीं होगा। इतना ही नहीं मनुष्य स्वर्ग के सुख से वंचित होकर नरकगामी बनेगा।

ध्यान रहे, भागवत की कितनी ही महिमा वर्णन की हो, पर वह शील, सदाचार एवं नैतिक आचरण के विरुद्ध है, विशेषत: वह वेद विरुद्ध ही है। दो चार बातें वेदानुकूल कहकर उसकी आड़ में वाममार्ग का खुला प्रचार भागवत में किया गया है। योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के जीवन पर जो लांछन भागवत में लगाये हैं, वे आज के भ्रष्ट से भ्रष्ट व्यभिचारी के भी समझ से बाहर है। महान आत्मा, आप्त पुरुष, सच्चे ईश्वर भक्त, वेदानुकूल आचरण करने वाले, मानवता के पोषक, सत्य धर्म प्रस्थापित कर सज्जनों की रक्षा करने वाले, योगी, श्रेष्ठतम, गोभक्त कृष्ण जी पर इस भागवत में जो दोष लगाये हैं वे इतने त्याज्य हैं, इतने भ्रष्ट हैं कि उन्हें नष्ट करने का एकमात्र उपाय है कि—

श्रीमद्भागवत हटाओ , श्रीकृष्ण कलंक मिटाओ॥

भागवत के कुछ आश्चर्य

(१) भागवत १/२३/३२ और ३३ के अनुसार शशबिन्दु राजा को १०,००० पत्नियाँ थीं और प्रत्येक पत्नी से एक-एक लाख बेटे इस प्रकार सौ करोड़ पुत्र हुए ।

(२) वैष्णव सम्प्रदाय वाममार्गी, दक्षिणी शूद्रों ने चलाया है, जिसमें वीर्यपान करने का लिखा है वही भागवत स्कन्ध ५ अ० २६ में वीर्य पीने का लिखा है।

(३) भागवत स्कन्ध १अ० ६ में श्राद्ध में मांस का उल्लेख है।

(४) ४/१९/२७ में यज्ञ में पशु बलि का स्पष्ट विधान है।

(५) १/२० के अनुसार उतथ्य की पत्नी गर्भवती थी परन्तु उतथ्य के छोटे भाई बृहस्पति कामातुर हुए, उसने भाभी से मैथुन किया जब गर्भस्थ बालक बोला, चाचाजी यह क्या करते हो यहाँ दो के लिए स्थान नहीं। गर्भाशय में बालक बोलता है।

(६) ५/१६ जम्बुद्वीप १ लाख योजन का है। इसके मध्य में मेरु पर्वत है, जो सुवर्णमय है।

(७) ब्रह्माजी ने अपने आधे शरीर से स्त्रियों की रचना की। क्या स्त्री उत्पत्ति का मार्ग बताया है, धन्य हो।

(८) ११-१० के अनुसार यज्ञ कर्ता को स्वर्ग में अप्सरायें मिलती हैं। क्या खोज है, आखिर भोग ही भोग।

(९) ४/२२ पृथ्वी के निकट सूर्य है और चन्द्रमा दूर है। क्या खगोलशास्त्र का बढ़िया ज्ञान है?

(१०) १/६ राजा युवनाश्व नि:सन्तान था, पुत्र प्राप्ति के लिए उसने यज्ञ का अभिमन्त्रित जल पिया और उसे गर्भ रहा, उसकी दाहिनी कोख काटकर उससे मान्धाता नामक चक्रवर्ती पुत्र उत्पन्न हुआ। पुरुष के पेट में गर्भ, बड़ा वैज्ञानिक शोध और कार्य भागवत करता है। वाह रे धर्मग्रन्थ!

ऐसी अनर्गल, सृष्टिक्रम तथा नियम विरोधी एवं कामोत्तेजक बातें भागवत में हैं, जिसे पढ़ना, सुनना ईश्वर की अवमानना कर पाप का भागी बनना है। अत: भागवत छोड़ो, इष्ट वेद से नाता जोड़ो।